IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संवेदना के धरातल पर
मॉरीशस का बाल नाट्य-साहित्य

डॉ० सीमा शर्मा
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

बाल साहित्य की रचना मूलतः बच्चों को केन्द्र में रखकर की जाती है। बच्चों का अपना कल्पना जगत्ए विचार और चिंतन होता है। बाल साहित्य जहाँ एक ओर बाल मन की कल्पना शक्ति को जागृत करता हैए वहीं वह बड़े ही सहज ढंग से खेल-खेल में उन्हें अपने परिवेश से भी परिचित कराता चलता है। यह एक मनौवैज्ञानिक सत्य है कि बच्चों और माता-पिताए बच्चों और शिक्षकों के मध्य यदि मुक्त संवाद की स्थिति हो तो बच्चे अंतर्मुखीए क्रधीए विद्रोही और कुंटित होकर रह जाते हैं। जब बाल साहित्य बच्चों के मन मस्तिष्क पर अपनी सकारात्मक छाप छोड़ता है तभी वह सफल है।

ंविष्णु शर्मा ऐसे शिक्षाशास्त्री थे जो यह मानते और समझते थे कि शिक्षा को बोझ बना कर बेचारे शिष्यों पर लाद देने की जगह एक ऐसा खेल भी बनया जा सकता है जिसमें वे अपना मन बहलाते हुए सीख सकें और शरारत करते हुए जान सकें। वे ऐसे शिक्षाविद् थे जो यह जानते थे कि शरारती बच्चे शरीफ बच्चों से अधिक प्रतिभाशाली होने के कारण ही शरारती हो जाते हैं और शरीफ बच्चों को जो बात बारह साल में समझाई जा सकती हैए वह शरारती बच्चों को छह महीने में भी समझाई जा सकती है।ं ;पंचतंत्र की कहानियाँ)

बाल साहित्य चाहे किसी भी विद्या में लिखा जा रहा हो उसके अपने उद्देश्य और दायित्वबोध होते हैं। बच्चों को स्वस्थ मनोरंजन देनाए उनका ज्ञानवर्द्धनए कल्पना शक्ति और सृजनात्मक प्रतिभा का विकास करनाए उनमें सद्वृत्तियों और मानवीय मूल्यों का विकास करनाए उन्हें एक जिम्मेदार नागरिक बनाने की ओर अग्रसर करना आदि बाल-साहित्य के मूल उद्देश्य होते हैं।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार और बाल-नाटक लेखकर विष्णु प्रभाकर के अनुसार ंउर्वर कल्पना शक्ति के साथ श्रेष्ठ सृजनात्मक प्रतिभा का उपयोग ही बाल नाटक को सही अर्थ दे सकता है। वह न केवल उनमें कला-बोध ही जागृत करेगा बल्कि उसके व्यक्तित्व के विकास को भी सही दिशा देगा। बालकों के व्यक्तित्व के विकास का अर्थ है- मनुष्य छिपी अंतःशक्ति का विकास। यह अंतःशक्ति ही मानव के भविष्य का आधार है।ं ;प्रतिनिधि हिन्दी बाल नाटक)

मॉरीशस का बाल नाट्य साहित्य इन्हीं आदर्शों और मूल्यों को लेकर रचा गया है। यह साहित्य बच्चों को खेल-खेल में नैतिकता और मूल्यों की शिक्षा देता है तथा अपने आस-पास के परिवेश के प्रति जागरूक कराता है। डॉ० मुनीश्वर लाल चिंतामणि का नाटक श्बंचन का मोलश बच्चों में कोमलताए दया की भावना और आशावादी दृष्टिकोण का विकास करता है। इस नाटक में दर्शाया गया है कि पुरस्कार स्वरूप मिली राशि को उदारतापूर्वक समाज के उपेक्षितए कमजोर वर्ग के कल्याण के लिए दान

कर देते है। ष्समाज के बीमारए दुखी और जरूरतमंद लोगों की मदद करने में हमे सदा आगे रहना चाहिए। नेहा! मैं इस नेक काम में तुम्हारे साथ हूँ।ष

डॉ० चिंतामणि के एक अन्य नाटक श्पेड़ लगाओए प्रदूषण भगाओश में पर्यावरण के प्रति जागरूकता दर्शायी गयी है। बढ़ता हुआ प्रदूषण आज सभी की चिंता का विषय है। वृक्षारोपण के अभियान से बच्चों और किशोरों को भी जोड़कर उनकी सामाजिक भागीदारी जय की जाती है। ष्पूरे देश में श्पेड़ बोनेश का अभियान चलाया जा रहा है। गांव की सफाई के बाद कल से नदी-नालों की सफाई शुरु की जाएगी। मैं अपने कॉलेज के मित्रों से यह अपेक्षा करता हूँ कि वे इस राष्ट्रीय कार्य में हमारी मद्द करें।ष

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ का नाटक श्केवलाश बच्चों में उच्च लक्ष्य कीश स्थापना करता है। नाटक का नायक केवला अभावग्रस्त जीवन जी रहा है। उसके पास जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन भी नहीं हैए फिर भी अपनी कमीज उतारकर अपनी पुस्तकों को बारिश में भीगने से बचाता है। उसमें संघर्षए जिजीविषाए जुझारूपन सभी उच्च मानवीय गुण देखने को मिलते हैं। वह अपने परिवेश और परिस्थितियों से भी परिचित है। उसके देश में श्मालबार कुलीश की क्या दुर्दशा हैए वह यह देखकर पीड़ा से भर उठता है। उसके संकलपए स्पप्न और प्रण बहुत बड़े हैंए सामाजिक हित उनमें सर्वोपरि आता है ष्मैं राज चलाने का ही सपना देख रहा हूँ। मजदूरों का दूख दूर करने की मैं सोच रहा हूँ। बहुत अत्याचार होता है उन पर। कल मैंने अपनी आँखों से देखा एक गोरे मालिक को एक मजदूर को सताते हुए। उसे कोड़े से मार रहा थाए देखकर मेरा खून खौलने लगा।ष

इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ के ही एक अन्य नाटक श्आदर्शश का नयक आदर्श भी सामाजिक अन्याय को देखकर विचलित होता है। वह इसे रोकने के लिए ईमानदार बैरिस्टर बनने का संकल्प लेता है।

विष्णु दत्त मधु का नाटक श्जहर का प्यालाश और श्बालक राजश नशाखोरी के विरूद्ध अपना स्वर तीव्र करता है। परिवार में पिता था अन्य बड़े सदस्य यदि नशाखोरी करते हैं तो उसका सीधा प्रभाव बच्चों और किशोरों के मन-मस्तिष्क पर पड़ता है। परन्तु ये नाटक दर्शाते हैं कि बच्चों की आपसी समझ-बूझ और जागरूकता से घर के बड़े सदस्य भी अपनी आदतों में सुधार कर लेते हैं।

बच्चों की एक बड़ी विशिष्टता होती है कि वे अपने बड़ों की नकल करते हैं। उनके खेल भी बड़ों की नकल पर आधारित होते हैं। इसीलिए यदि हम अपने बच्चों से यह अपेक्षा रखते हैं कि उनमें सभी मानवीय सद्वृत्तियों का विकास हो तो सर्वप्रथम हमें अपना आचरण सुधारना होगाए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा। सीता रामयाद का नाटक श्शिष्टाचार घर से आरम्भ से होता हैश इसी तथ्य की ओर संकेत करता है। नाटक के आरम्भ में माँ बताती है कि वह किस प्रकार बाँस की नजर बचाकर ऑफिस से फोटोकॉपी करवाती हैए तथा ऑफिस में प्रयोग किये जाने वाले कागज घर ले आती है। पिता सरकारी वाहन का दुरुपयोग अपने निजी कार्यों (घूमने-फिरनेए शादी में जाना) के लिए करता है। बुआ पड़ोसी के खेत से भाजीए गन्नेए टमाटर या कटहल तोड़ लाती है। ऐसी स्थिति में जब बच्चे को फूल तोड़ने के लिए डॉटा जाता है और उसे यह कहा जाता है कि चोरी करना बुरी बात है तब बच्चा विद्रोही हो उठता है। जिस आचरण की उसके बड़े उससे अपेक्षा करते हैंए पहले वे स्वयं में तो सुधार लायें। ष्मैं पूछता हूँ जब तुम दफ्तर से कागज लाती होए फोटो कॉपी करके लाती हो तो क्या यह चोरी नहीं हैष्ष्ष्ष्ष जब आप सरकार की मोटर लेकर हमें शादी में ले जाते हैं तो क्या यह चोरी नहीं है।ष

केशवदत्त चिंतामणि के नाटक श्कर भला सो भलाश तथा श्अन्त भला सो भलाश सदाचार की शिक्षा देते हैं। बच्चे और किशोर कुप्रवृत्तियों के शिकार जल्दी होते हैं क्योंकि उनका मानस कोमल और छल रहित होता है इसलिए समाज के विध्वंसक लोग इस आयु वर्ग के बच्चों को जल्द ही अपना शिकार बना लेते हैं। केशवदत्त चिंतामणि के नाटक बच्चों और किशोरों को इन्हीं लोगों से बचने की प्रेरणा देते हैं। साथ ही किशोरावस्था का प्रेम छिछला और अलप समय का होता है क्योंकि यह श्आकर्षणश पर टिका होता है इसमें त्याग और उत्तरदायित्व बोध नहीं होता। यदि हम टिकाऊ सम्बन्ध की नींव रखना चाहते हैं तो हमें

उपयुक्त समय (बालिग) होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। ष्यह शिक्षा सदा याद रखो- धन खोया तो कुछ नहीं खोया। स्वास्थ्य खोया तो कुछ-कुछ खोया। चरित्र खोया तो सब कुछ खोया।ष

बलवन्त नौबत सिंह का नाटक श्सीता स्वयंवरश अपनी पौराणिक आदर्श कथाओं के माध्यम से बच्चों में विनम्रताए वीरताए गुरु के प्रति निष्ठा आदि उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है।

बलवन्त नौबत सिंह का एक अन्य नाटक श्मेरी बिल्ली मुझसे ही म्याँऊश में दर्शाया गया है कि यदि हमें समाज में धूर्त और चालाक लोगों से निपटना है तो उन्हीं की भाति व्यवहार करना पड़ जाता है।

बिदवन्ती अयोध्या- तिलक के नाटक श्समस्याश में परदेश जाने की पीड़ाए विदेश में उपेक्षित जीवन का संत्रास दर्शाया गया है। साथ ही किशोर पीढ़ी का एक संकल्प भी उभरता है कि वह अपने देश में रह कर ही समाज सेवा करेंगे। विदेशी भूमि की उननति से पूर्व अपनी भूमि की प्रगति व उसको संवारना अधिक आवश्यक है।

कल्पना लाल जी का श्नाटकश अभावग्रस्त जीवनए एकाकी वृद्धावस्था की पीड़ा की दर्शाता है। नाटक मे धनुकधारी और सावित्री लॉटरी निकल जानेए जीवन स्तर सुधरने के दिवास्वप्न देखते रहते हैं। जब जादूगर आकर उन्हें कहता है कि तुम्हारी लॉटरी लग जायेगीए तुम्हारा जीवन-स्तर सुधर जायेगा पर बदले में तुम्हारे पुत्र का अंत हो जायेगा तो वे दोनो ही अभावग्रस्त जीवन को सुधरने के स्थान पर पुत्र का जीवन मांगते हैं। तकलीफ देह जीवन में भी पारिवारिक आत्मीयता और मानवीय सम्बन्ध नहीं मरते। ष्क्या कहा पैसे के बदले बेटा लेगा।.... ना बाबा पैसे के लिए मैं अपने बेटे को नहीं दूँगी।ष

केवल नायक का नाटक श्सबके बापूश गाँधी जी के आदर्शों और गाँधी वादी मूल्यों की स्थापना करता है। यदि हम समृद्ध हैंए शक्तिशाली हैं तो उपलब्धि तथा उर्जा का उपयोग हमें समाज कल्याण के लिए करना चाहिए। ष्हमारा देश परतन्त्र है.... लेकिन सबसे पहले हमें अपनी वासनाओंए कुविचारों और कुसंस्कारों को मिटाना चाहिए। तभी तो देश आजाद हो जाएगा परन्तु जीवन भर हम आज़ाद नहीं हो पायेंगे।ष

हमारे जीवन-मूल्यों में भाग्य के स्थान पर कर्म को महत्व दिया गया है। भुखमरीए पिता की लम्बी बीमारी और अभावग्रस्त जीवन की स्थिति में भी परिश्रम महत्वपूर्ण है। जयालक्ष्मी फ्तू की स्थिति में भी परिश्रम महत्वपूर्ण है। जयालक्ष्मी फ्तू का नाटक श्भाग्य की रेखाश भिक्षावृत्ति का तिरस्कार कर ईमानदारी और परिश्रम के साथ सम्मान पूर्ण जीवन जीने की कला सिखाता है ष्भाग्य के सामने कभी भी नहीं झुकना वरना वह तुम्हें झुकाता रहेगा। आदमी परिश्रम से जीवन में क्या कुछ नहीं कर सकताष

दिब्या रघु का नाटक श्मैं शादी नहीं करूंगीश बाल-विवाह का विरोध तथा लड़कियों की शिक्षा और उनके साथ समानता की स्थापना करता है।

स्वस्ती सिराच का नाटक श्मेरी दादीश बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना बढ़ाता है। संयुक्त परिवार में बच्चों से प्रेम और बुर्जुगों के प्रति सम्मान हमारे जीवन आदर्श हैं। उन्हीं जीवन मूल्यों की स्थापना श्मेरी दादीश नाटक करता है।

इस प्रकार मॉरीशस का बाल नाट्य-साहित्य जहाँ एक ओर बालकों में उच्च मानवीय आदर्शों और मूल्यों की स्थापना करता है। वहीं दूसरी ओर उन्हें उनसे तथा उनके परिवेश से भी परिचित कराता चलता है। नाटक का अंत सुधारवा और आशावादी संदेश से पूर्ण होता है। सामाजिक समस्याओं के निवारण में उनका दायित्व और भागीदारी भी तय करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1ण पंचतंत्र की कहानियाँ - संपादक भगवान सिंह

2ण हितोपदेश - पण्डित नारायण शर्मा

3ण प्रतिनिधि हिन्दी बाल नाटक - संपादक हरिकृष्ण देवास

4ण मॉरीशस का बाल नाटक सग्रह - प्रधान संपादक इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ